* पदार्थ सात हैं— द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवाय अभाव।

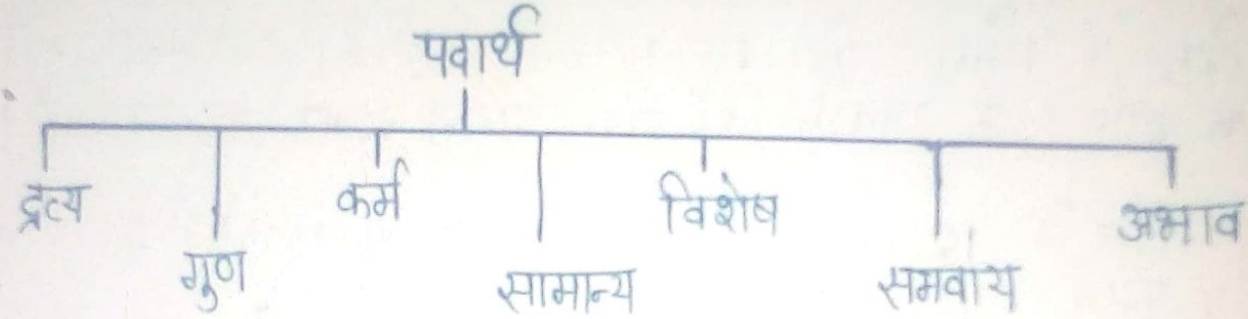

* सप्त पदार्थों में पहला पदार्थ द्रव्य है। द्रव्य के नौ भेद हैं— ③
पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन।
पृथ्व्यप्तेजो वायवाकाश कालदिगात्म-मनांसि नवैव।

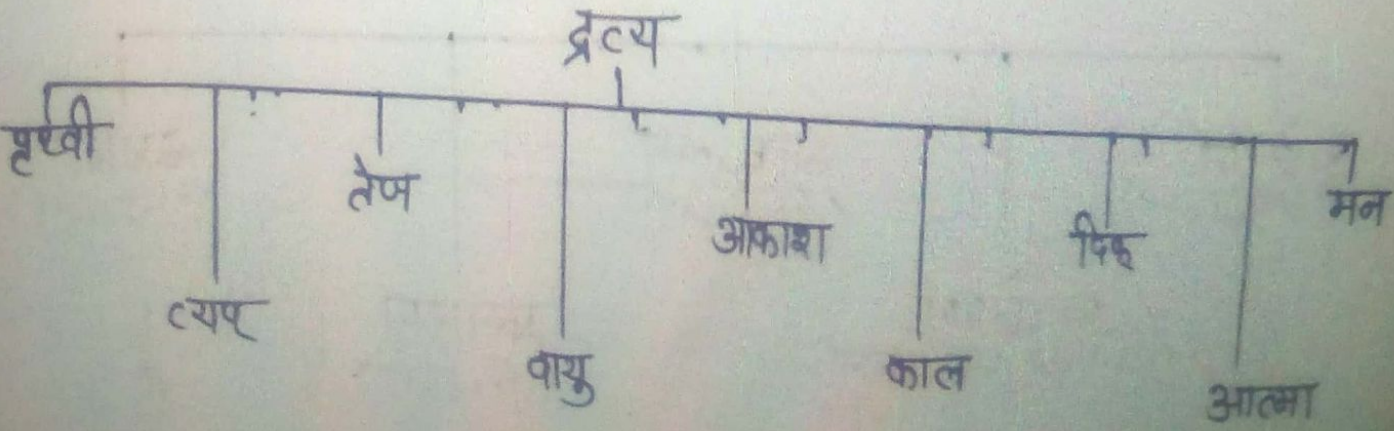

Scanned with CamScanner

* गुण – गुण २५ हैं →

२५ गुण

9 मूर्तगुण
- रूप
- रस
- गन्ध
- स्पर्श
- परत्व
- अपरत्व
- द्रवत्व
- स्नेह

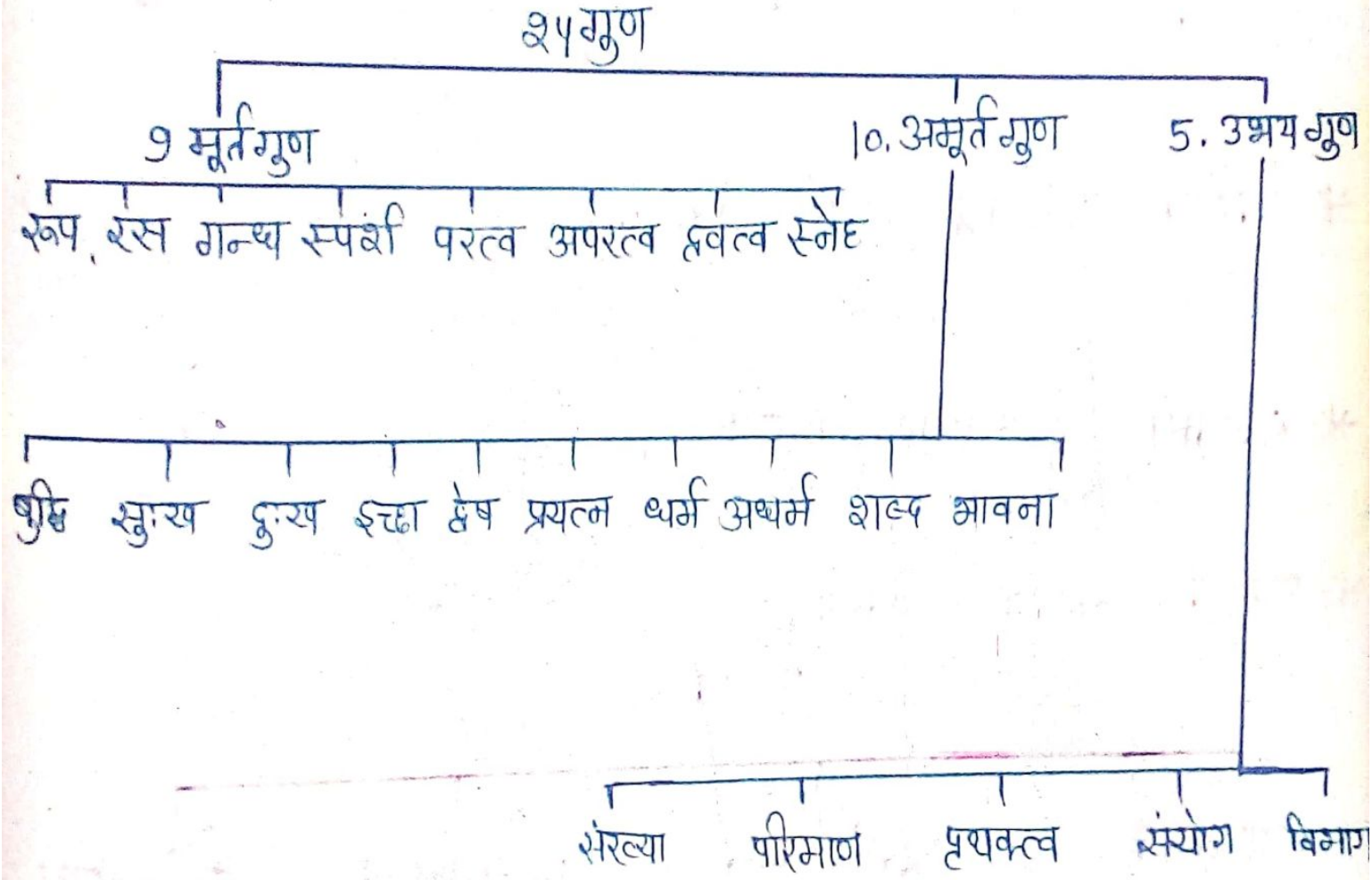

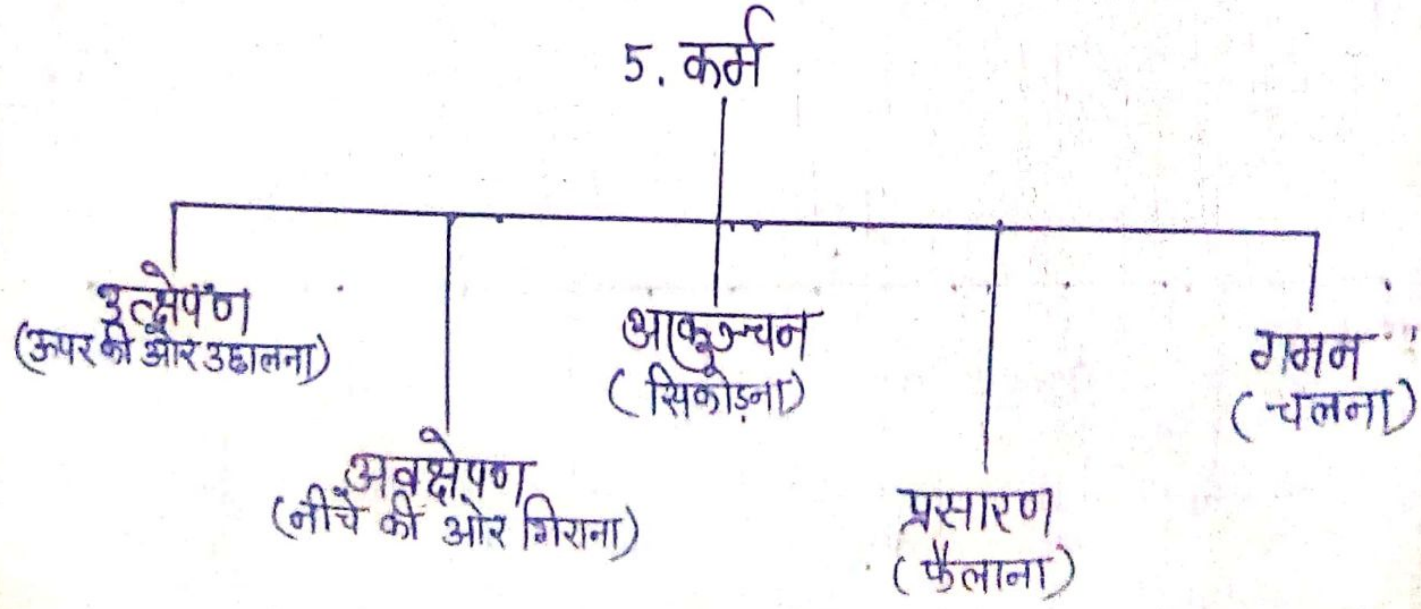

10. अमूर्त गुण
- बुद्धि
- सुःख
- दुःख
- इच्छा
- द्वेष
- प्रयत्न
- धर्म
- अधर्म
- शब्द
- भावना

5. उभय गुण
- संख्या
- परिमाण
- पृथक्त्व
- संयोग
- विभाग

* कर्म – कर्म पाँच हैं – (4)

5. कर्म
- उत्क्षेपण (ऊपर की ओर उछालना)
- अवक्षेपण (नीचे की ओर गिराना)
- आकुञ्चन (सिकोड़ना)
- प्रसारण (फैलाना)
- गमन (चलना)

* सामान्य – परमपरं चेति द्विविधं सामान्यम्।
पर अपर रूप से सामान्य के दो भेद हैं।

* विशेष – नित्यद्रव्यवृत्तयो विशेषास्त्वनन्ता एव।
नित्य द्रव्यवृत्ति वाले विशेष अनन्त हैं।

* समवाय – समवायस्त्वेक एव।
समवाय तो एक ही होता है।

* अभाव – अभावश्चतुर्विधः ↓

अभाव
- प्रागभाव
- प्रध्वंसाभाव
- अत्यन्ताभाव
- अन्योन्याभाव

द्रव्यलक्षण प्रकरणम् –

(5)

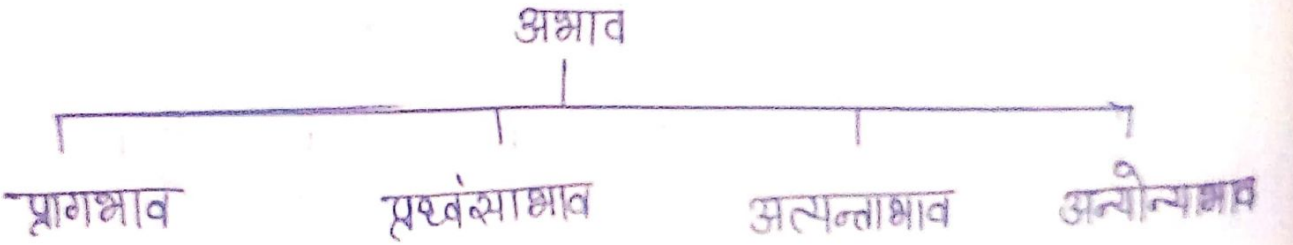

पृथिवीत्र गन्धवती पृथ्वी – उन 9 द्रव्यों में पहली परिगणित गन्ध से युक्त पृथ्वी है। यह दो प्रकार की है।

पृथ्वी
- नित्या (परमाणुरूपा)
- अनित्या (कार्यरूपा)
  - शरीरं (हमारा शरीर)
  - इन्द्रियं (घ्राण में)
  - विषयः (मृत पाषाणादि)

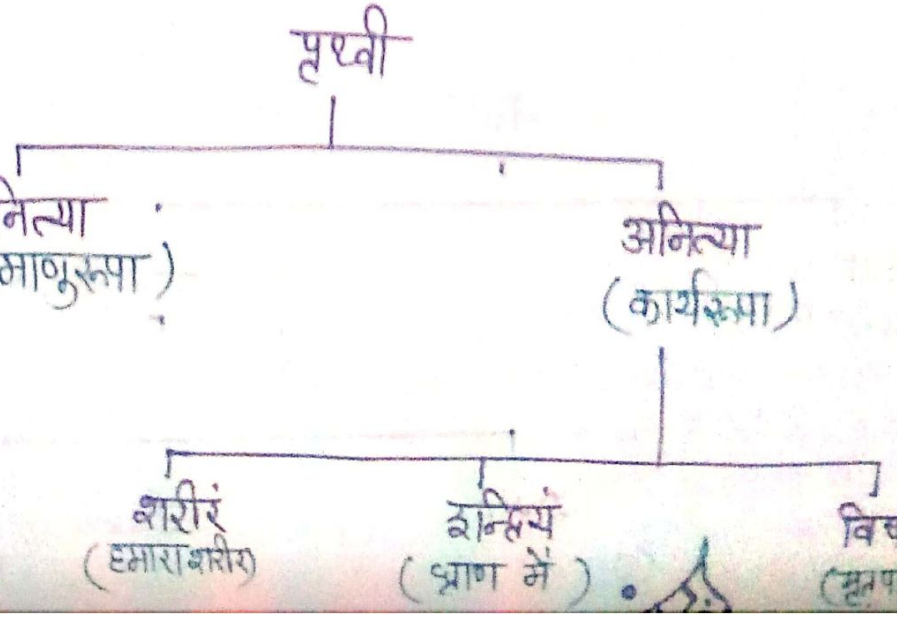

Scanned with CamScanner

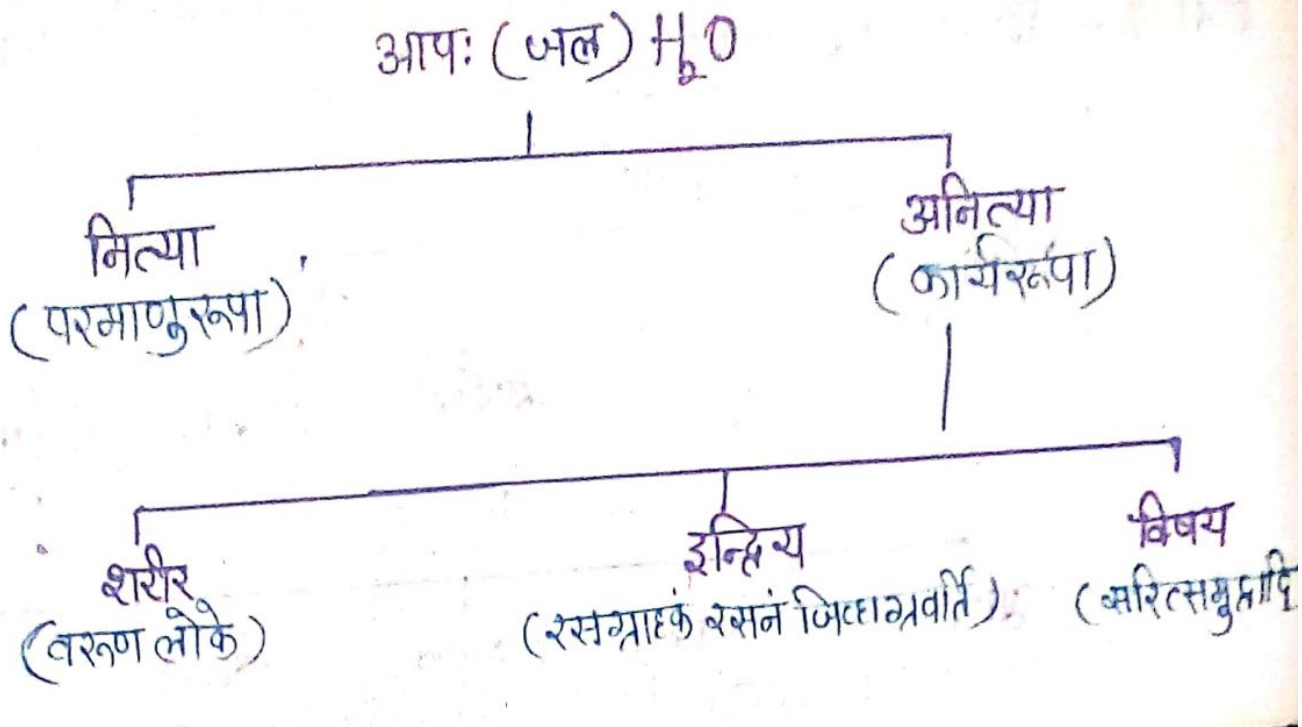

3. तेजः - उष्णस्पर्शवत्तेजः। उष्ण स्पर्श वाला तेज है। यह भी दो प्रकार का है - नित्य (परमाणुरूप), अनित्य (कार्यरूप) इसका विषय चार प्रकार का होता है।

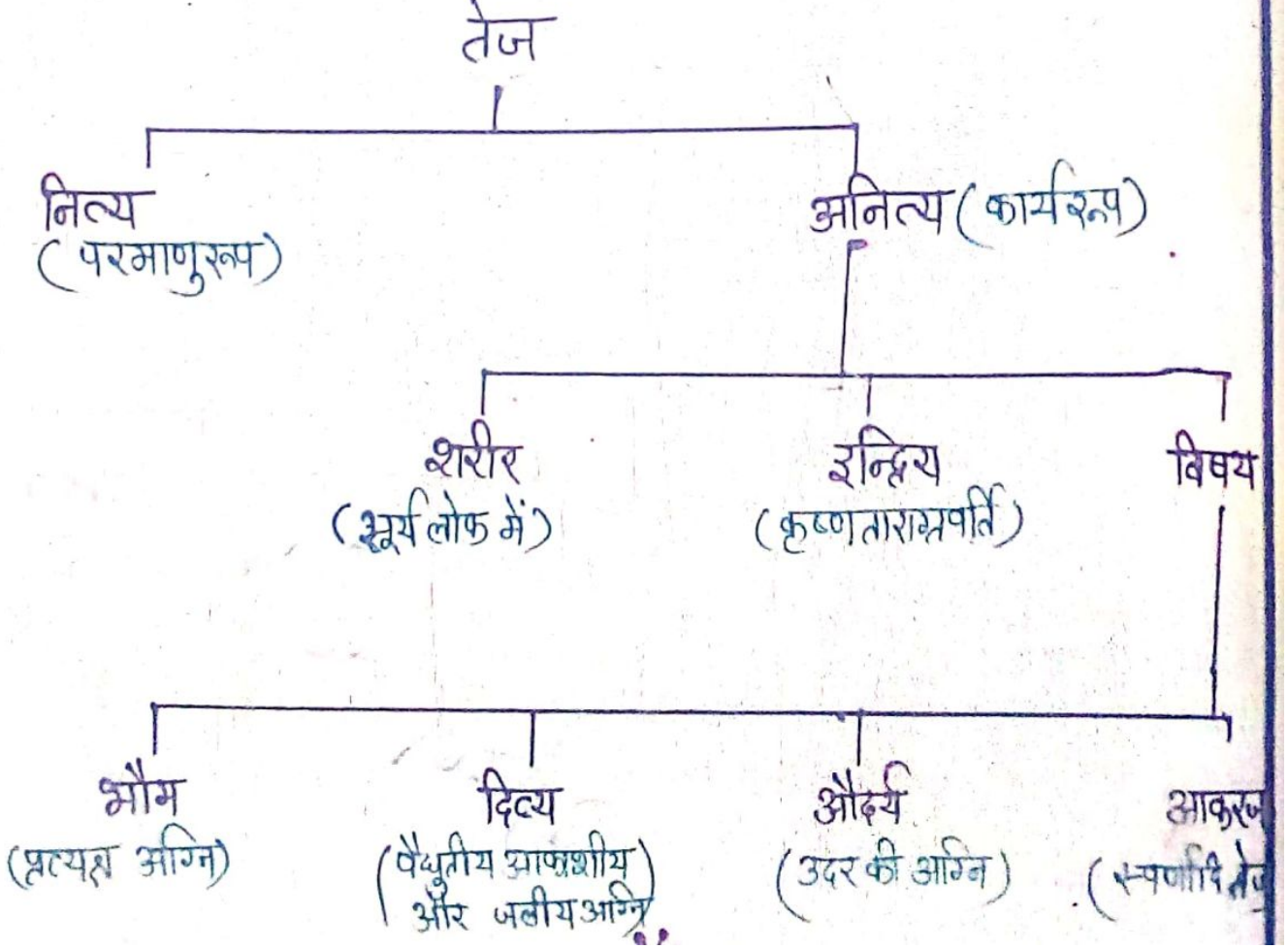

Scanned with CamScanner

4. वायुः - रूपरहितस्पर्शवान् वायुः।

रूप से रहित और स्पर्शयुक्त वायु है। यह भी दो प्रकार की होती है - नित्य (परमाणुरूप), अनित्य (कार्यरूप)।

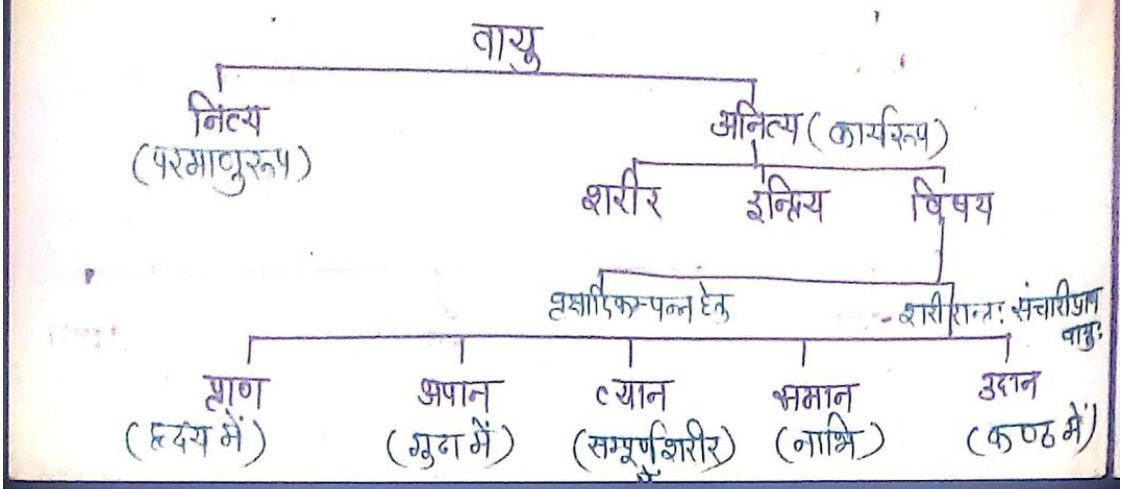

5. आकाश - शब्दगुणकमाकाशम्।

शब्द गुण से युक्त आकाश है और वह विभु, नित्य और ए

6. काल - अतीतादिव्यवहारहेतुः कालः।

अतीत आदि के व्यवहार का हेतु ही काल है, वह भी विभु नित्य और एक है।

7. दिक् - प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक्।

प्राची आदि व्यवहार का कारण ही दिक् है और वह एक सर्वव्यापक एवं नित्य है।

8. आत्मा - ज्ञानाधिकरणमात्मा।

ज्ञान का अधिकरण/आधार आत्मा है। यह दो प्रकार क है जीवात्मा एवं परमात्मा।

Sanskritganga.org

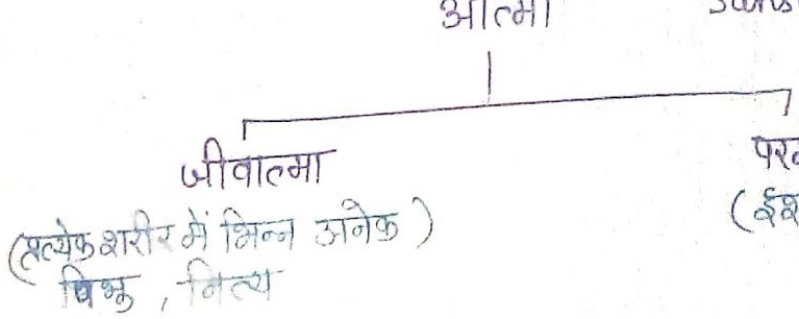

9. मन - सुखाद्युपलब्धेः साधनमिन्द्रियं मनः।

सुख आदि की उपलब्धि का साधन इन्द्रिय मन है। यह प्रत्येक आत्मा के साथ नियत रूप से रहता है, वह अनन्त, परम

Scanned with CamScanner

① रूप - चक्षुमात्रग्राह्यो गुणो रूपम्।
चक्षु मात्र से ग्रहण किया जाने वाला गुण रूप है। इसके सात भेद हैं।

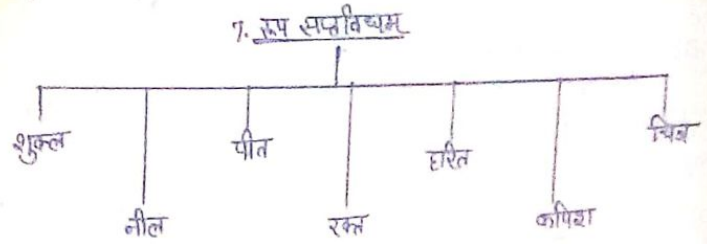

② रस - रसनाग्राह्यो गुणो रसः।
रसना (जिव्हा) इन्द्रिय द्वारा ग्रहण किया जाने वाला गुण रस है। यह 6 प्रकार का होता है पृथ्वी (6 रस) तथा जल (मात्र मधुर) में विद्यमान रहता है।

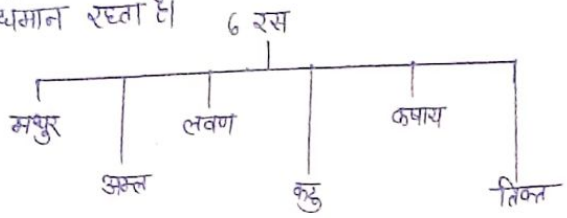

③ गन्ध - घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः।
घ्राण नामक इन्द्रिय द्वारा ग्रहण किया जाने वाला गुण 'गन्ध' है। यह दो प्रकार का है - सुरभि, असुरभि। यह मात्र पृथ्वी में ही विद्यमान रहता है।

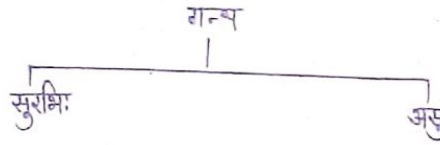

④ स्पर्श - त्वगिन्द्रियमात्रग्राह्यो गुण स्पर्शः।
त्वक् इन्द्रिय से ग्रहण किया जाने वाला गुण स्पर्श है। और यह तीन प्रकार का है शीत, उष्ण, अनुष्ण। यह पृथ्वी (अनुष्ण), जल (शीत, तेज (उष्ण), वायु (अनुष्ण) में विद्यमान रहता है।

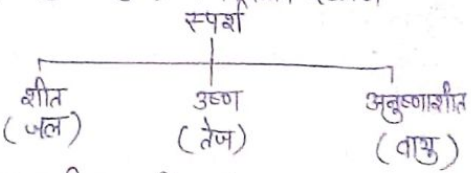

⑤ संख्या - एकत्वादिव्यवहारहेतुः संख्या।
एक दो तीन इत्यादि व्यवहार का कारण ही संख्या है। यह सभी नौ द्रव्यों में रहती है।

⑥ परिमाण - मानव्यवहाराऽसाधारणकारणं परिमाणम्।
मान (माप तौल) के व्यवहार के असाधारण कारण को ही परिमाण कहते हैं। इसकी स्थिति सभी नौ द्रव्यों में रहती है। यह चार प्रकार का है -

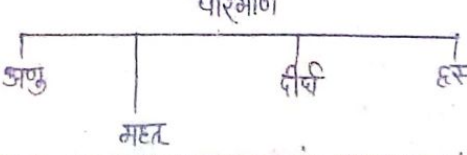

⑦ पृथक् - पृथग् व्यवहाराऽसाधारणकारणं पृथक्त्वम्।
पृथक् व्यवहार के असाधारण कारण को पृथक्त्व कहा गया है। यह सभी द्रव्यों में विद्यमान रहता है।

⑧ संयोग - संयुक्तव्यवहारहेतुः संयोगः।
संयुक्त व्यवहार का कारण ही संयोग है। यह सभी द्रव्यों में विद्यमान रहता

Scanned with CamScanner

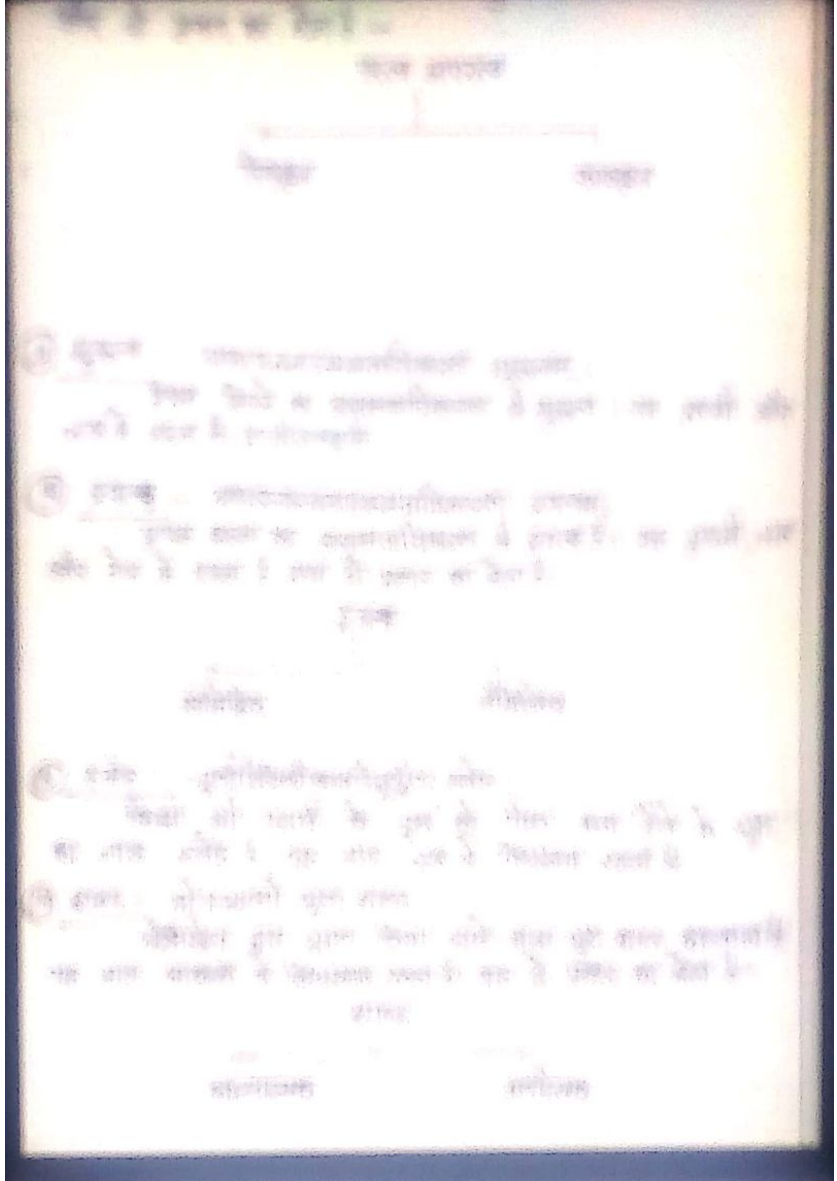

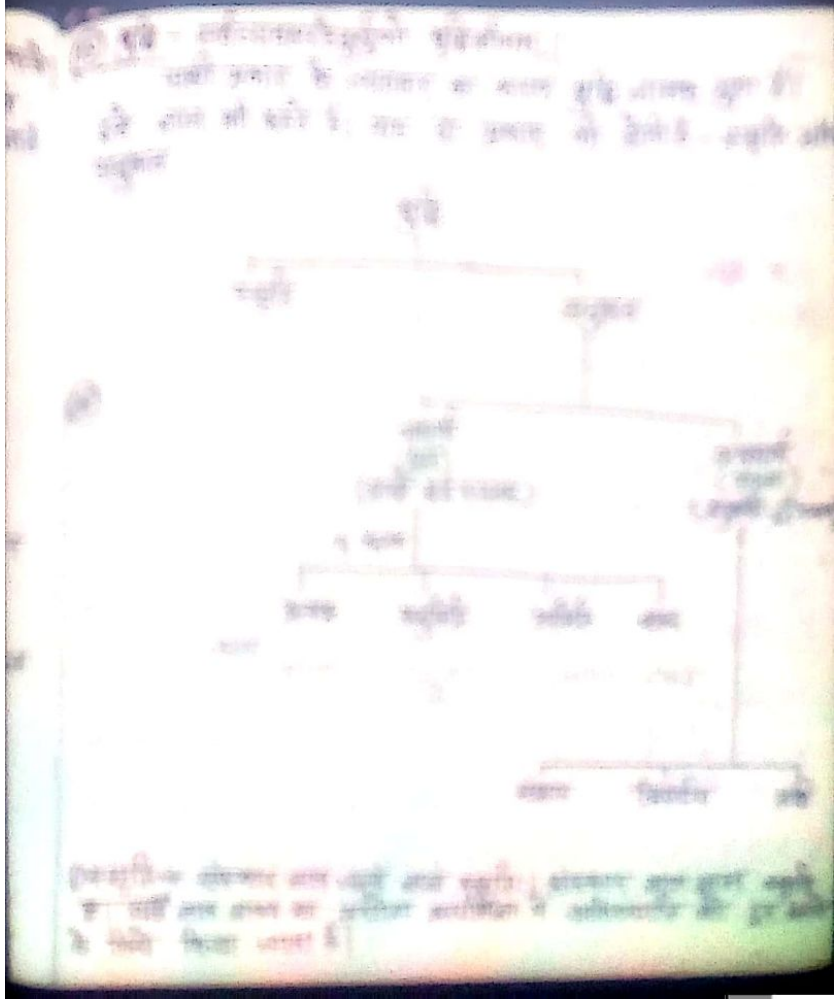

Scanned with CamScanner

17. सुःख - सर्वेषामनुकूलवेदनीयं सुखम्।
सबको अनुकूल प्रतीत होने वाला सुख होता है अर्थात् जो व्यक्ति को स्वयं के अनुकूल लगता है वही सुख होता है।

18. दुःख - सर्वेषां प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम्।
जो सभी प्राणियों द्वारा प्रतिकूलता का अनुभव किया जाता है वही दुःख है।

19. इच्छा - इच्छा कामः।
काम इच्छा है। अर्थात् व्यक्ति प्राप्त करने एवं होने की जो कामना करता है वही इच्छा है।

20. द्वेष - क्रोधो द्वेषः।
क्रोध द्वेष है।

21. प्रयत्न - कृतिः प्रयत्नः।
कार्य को करने के संकल्प से लेकर पूर्णता तक किया गया प्रयास ही प्रयत्न है।

22 धर्मः - विहितकर्मजन्यो धर्मः।
वेदोक्त कर्म जन्म अदृष्टता ही धर्म है।

23. अधर्म - निषिद्धकर्मजन्यस्त्वधर्मः।
जबकि वेदों में जिन कार्यों का निषेध किया गया है उन कर्मों को जान बूझकर या अनजाने में भी करने से उत्पन्न होने वाला अदृष्ट ही अधर्म है

*बुद्धयादयोऽष्टावात्ममात्रविशेषगुणाः। *
बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म ये आठ गुण आत्मा के विशेष गुण हैं। बुद्धि, इच्छा, प्रयत्न नित्य, अनित्य से दो प्रकार के हैं और ये ईश्वर के नित्य तथा जीव के अनित्य होते हैं।

24. संस्कारस्त्रिविधः - वेगो भावना स्थितिस्थापकश्चेति।
संस्कार के तीन भेद हैं - वेग, भावन, स्थितिस्थापक

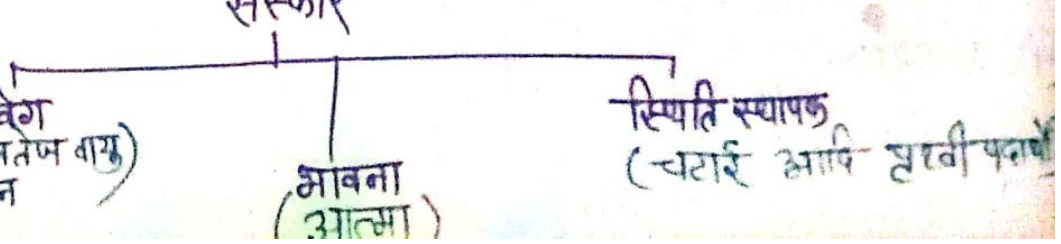

③ - कर्म - चलनात्मक कर्म - चलनात्मक क्रिया 'कर्म' नामक पदार्थ है।

① उत्क्षेपण - ऊर्ध्वदेशासंयोगहेतुरुत्क्षेपणम् -
किसी वस्तु या पदार्थ का ऊपर की ओर उछालना 'उत्क्षेपण कर्म' है।

② अवक्षेपण - अध्योदेशासंयोगहेतुरवक्षेपणम् -
किसी वस्तु या पदार्थ को ~~ऊपर की ओर उ~~ गिराना ही अवक्षेपण है।

③ आकुञ्चन - शरीरसन्निकृष्टदेशसंयोगहेतुराकुञ्चनम् -
जबकि अपने शरीर में सन्निकृष्ट देश में संयोग के हेतु को 'आकुञ्चन' नामक क्रिया कहते हैं।

④ प्रसारण - विप्रकृष्टसंयोगहेतुः प्रसारणम् -
अपने शरीर से दूर स्थित प्रदेश में संयोग का हेतु ही प्रसारण नामक कर्म है।

⑤ गमन - अन्यत्सर्वं गमनम् - उपर्युक्त चारों के अतिरिक्त चलना आदि गमन है।

④ सामान्य - नित्यमेकमनेकाऽनुगतं सामान्यम्।
नित्य, एक एवं अनेक में स्थित रहने वाला ही सामान्य है यह द्रव्य गुण और कर्म में विद्यमान रहता है। यह दो प्रकार का होता है - पर (सामान्य सत्ता), अपर (द्रव्यत्व)।

⑤ विशेष - नित्यद्रव्यवृत्तयो व्यावर्तका विशेषाः।
नित्य द्रव्यों में विद्यमान रहने वाला व्यावर्तक ही विशेष है।

⑥ समवाय - नित्यसम्बन्धः समवायः। समवाय नित्य सम्बन्ध है। जो अयुतसिद्ध पदार्थों में विद्यमान रहता है।

⑦ अभाव -

Scanned with CamScanner

1. संयोग - चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः। नेत्र से ~~प्रत्यक्ष~~ घट का प्रत्यक्ष होना संयोग है।

2. संयुक्त समवाय - घटप्रत्यक्षजनने संयुक्त समवायः सन्निकर्षः - घट के रूप का प्रत्यक्ष करने में 'संयुक्त समवाय' नामक सन्निकर्ष है

3. संयुक्त समवेत समवाय - रूपत्व सामान्य प्रत्यक्षे संयुक्त समवेत समवाय रूपत्व जाति के प्रत्यक्ष में 'संयुक्त समवेत समवाय' नामक सन्निकर्ष होता है।

4. समवाय - श्रोत्रेण शब्दसाक्षात्कारे समवायः - श्रोत्र द्वारा शब्द का साक्षात्कार करने में 'समवाय' होता है।

5. समवेत समवाय - शब्दसाक्षात्कारे समवेतसमवायः - शब्दत्व के साक्षात्कार में 'समवेत समवाय' सन्निकर्ष होता है।

6. विशेषण विशेष्य भाव - अभाव प्रत्यक्षे विशेषणविशेष्यभावः - अभाव का प्रत्यक्ष करने में विशेषण - विशेष्य भाव सन्निकर्ष होता है।

षड्विध सन्निकर्षः

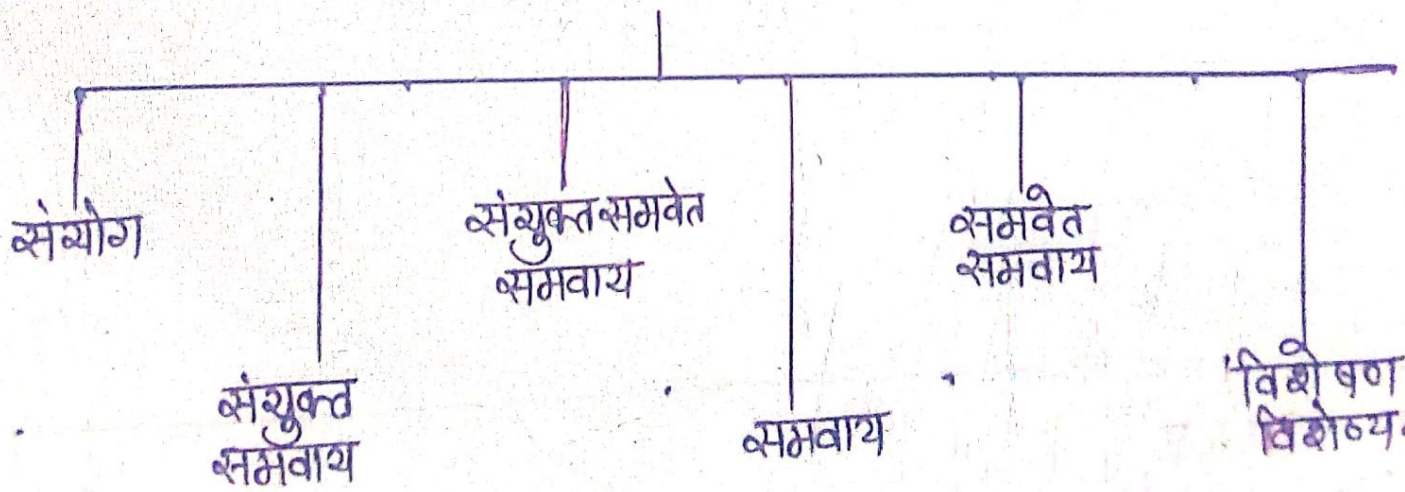

Scanned with CamScanner